AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2024
Impact Factor:11.9
Subject:Literature

समकालीन कविता में पर्यावरणीय शोषण: चिंतन और प्रतिरोध के स्वर

दीप्ति यादव
शोधार्थी
हिन्दी विभाग, श्याम विश्वविद्यालय, दौसा (राज.)
डॉ. रजनीश भारद्वाज
शोध पर्यवेक्षक
श्याम विश्वविद्यालय, दौसा (राज.)

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/ PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

भूमिका :

समकालीन कविता में पर्यावरणीय शोषण का विषय अत्यंत प्रासंगिक है। बदलते सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिदृश्य में साहित्य ने हमेशा समाज को दिशा देने का कार्य किया है। कविता, एक साहित्यिक विधा के रूप में, संवेदनशील विषयों को उजागर करने और मानवीय चेतना को जागृत करने का माध्यम बनती रही है। समकालीन कवि न केवल पर्यावरणीय समस्याओं को रेखांकित करते हैं, बल्कि उनके चिंतन और प्रतिरोध के स्वर भी प्रस्तुत करते हैं। यह शोध पत्र समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरणीय शोषण के विभिन्न पहलुओं, चिंतन और प्रतिरोध के स्वर पर केंद्रित है।

मुख्य शब्द: समकालीन कविता, पर्यावरणीय शोषण, चिंतन और प्रतिरोध, औद्योगिकीकरण और पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, शहरीकरण और पर्यावरणीय संकट, साहित्य और पर्यावरण, पारिस्थितिकीय असंतुलन ।

पर्यावरणीय शोषण का साहित्यिक परिप्रेक्ष्य :

पर्यावरणीय शोषण का अर्थ है प्रकृति के संसाधनों का अनुचित दोहन और उसका विनाश। यह समस्या आज वैश्विक स्तर पर गहन चिंता का विषय है। साहित्य में पर्यावरणीय शोषण का चित्रण

ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2024
Impact Factor:11.9
Subject:Literature

नई बात नहीं है, लेकिन समकालीन कविताओं ने इसे विशिष्ट रूप से प्रस्तुत किया है। ये कविताएँ मानवीय गतिविधियों द्वारा पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों को उजागर करती हैं और प्रकृति तथा मनुष्य के बीच के संबंधों को पुनर्परिभाषित करने का प्रयास करती हैं।

औद्योगिकीकरण और पर्यावरणीय विनाश-

- समकालीन कविताएँ इस बात पर जोर देती हैं कि औद्योगिकीकरण ने किस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों का अति-दोहन किया है। उदाहरणस्वरूप, फैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआँ, जंगलों की कटाई और जल स्रोतों का प्रदूषण कविता के माध्यम से प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है।

शहरीकरण और पर्यावरणीय संकट

- बढ़ते शहरीकरण के कारण प्रकृति का ह्रास और भूमि उपयोग में बदलाव जैसी समस्याएँ समकालीन कविताओं में स्थान पाती हैं। इन कविताओं में ग्रामीण परिवेश के समाप्त होने और शहरीकरण के कारण पारिस्थितिकीय असंतुलन की चिंता व्यक्त की गई है।

समकालीन कविताओं में चिंतन के स्वर :

समकालीन कविताओं में पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर गहन चिंतन प्रस्तुत किया गया है। ये कविताएँ न केवल पर्यावरणीय संकट को उजागर करती हैं, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के संबंधों पर भी पुनर्विचार करती हैं।

प्रकृति के प्रति मनुष्य का दृष्टिकोण

- कविताएँ इस बात पर सवाल उठाती हैं कि आधुनिक मनुष्य ने प्रकृति को केवल एक संसाधन के रूप में देखा है। जैसे कि कवि लिखता है:

"पेड़ों के कटने की चीखें सुनाई नहीं देती, शोर में डूब गए जंगलों के आँसू।"

जलवायु परिवर्तन की चिंता

- समकालीन कविताएँ जलवायु परिवर्तन जैसे विषयों को गहराई से छूती हैं। इनमें बेमौसम बारिश, सूखा और ग्लेशियरों के पिघलने जैसे संकटों का चित्रण मिलता है।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2024
Impact Factor:11.9
Subject:Literature

ग्रामीण और आदिवासी समाज की समस्याएँ

- पर्यावरणीय शोषण से सबसे अधिक प्रभावित ग्रामीण और आदिवासी समाज को कविताओं ने केंद्र में रखा है। उनकी आजीविका, भूमि और जल स्रोतों पर बढ़ते खतरे को ये कविताएँ उजागर करती हैं।

प्रतिरोध के स्वर :

पर्यावरणीय शोषण के खिलाफ समकालीन कविताओं में प्रतिरोध के स्वर स्पष्ट रूप से उभरते हैं। ये कविताएँ न केवल समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं, बल्कि समाधान के लिए जागरूकता भी फैलाती हैं।

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का आह्वान

- कविताएँ समाज से प्रकृति की रक्षा के लिए सामूहिक प्रयास करने का आह्वान करती हैं। उदाहरण के लिए:

"जल बचाओ, पेड़ लगाओ, मिट्टी की महक को लौटाओ।"

सामाजिक आंदोलन और साहित्य

- समकालीन कविताएँ पर्यावरणीय आंदोलनों को समर्थन देती हैं। चिपको आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन जैसे आंदोलनों की प्रेरणा कविताओं में झलकती है।

सतत विकास की ओर प्रेरणा

- सतत विकास का विचार समकालीन कविताओं में प्रमुखता से उभरता है। कविताएँ यह संदेश देती हैं कि विकास और पर्यावरण संरक्षण एक साथ संभव है।

समकालीन कवियों के योगदान :

समकालीन कवियों ने पर्यावरणीय शोषण के मुद्दे को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। कुछ प्रमुख कवियों और उनकी कविताओं का योगदान उल्लेखनीय है:

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2024
Impact Factor:11.9
Subject:Literature

अज्ञेय

- अज्ञेय की कविताओं में प्रकृति के प्रति गहरी संवेदना और आधुनिक युग में उसके शोषण पर चिंता व्यक्त की गई है। उनकी कविताओं में जंगलों, नदियों और पर्वतों का चित्रण आत्मीयता और चेतावनी दोनों का भाव लेकर आता है।
- उदाहरण: "नदी के द्वीप" में नदी का रूपक मानवीय हस्तक्षेप और पर्यावरणीय ह्रास की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

मुक्तिबोध

- मुक्तिबोध की कविताएँ मनुष्य के लालच और पर्यावरणीय विनाश के खिलाफ चेतावनी देती हैं। उनकी कविताएँ आधुनिक सभ्यता के पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को उजागर करती हैं।
- उदाहरण: "अँधेरे में" कविता में प्रकृति का ह्रास और समाज की उदासीनता का चित्रण मिलता है।

केदारनाथ सिंह

- केदारनाथ सिंह की कविताएँ शहरीकरण और पर्यावरणीय असंतुलन की समस्याओं को उजागर करती हैं। उनकी कविता "जमीन पक रही है" में प्रकृति के बदलते स्वरूप की गहरी चिंता दिखती है।
- उनकी कविताओं में पेड़, मिट्टी और जल जैसे तत्वों का मानवीकरण मिलता है, जो प्रकृति और मनुष्य के रिश्ते को दर्शाता है।

विनोद कुमार शुक्ल

- विनोद कुमार शुक्ल की कविताएँ पर्यावरणीय शोषण के खिलाफ प्रतिरोध का स्वर प्रस्तुत करती हैं। उनकी कविताएँ ग्रामीण जीवन की सादगी और प्रकृति के सौंदर्य को बचाने का आह्वान करती हैं।
- उदाहरण: उनकी कविताओं में गाँव, खेत, और नदी के माध्यम से शोषण के खिलाफ चेतना का स्वर सुनाई देता है।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2024
Impact Factor:11.9
Subject:Literature

कुंवर नारायण

- कुंवर नारायण की कविताएँ प्रकृति और मनुष्य के संबंधों को दार्शनिक दृष्टि से देखती हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति के प्रति सहानुभूति और शोषण के खिलाफ गहरी चिंता व्यक्त होती है।

राजेश जोशी

- राजेश जोशी की कविताएँ आधुनिक विकास के नाम पर पर्यावरणीय क्षति और पारिस्थितिक असंतुलन के मुद्दों को उठाती हैं। उनकी कविताओं में ग्रामीण परिवेश और पर्यावरण के प्रति मानवीय दायित्व का स्पष्ट आह्वान है।

निष्कर्ष :

समकालीन कवि अपने लेखन के माध्यम से पर्यावरणीय शोषण के खिलाफ जागरूकता फैलाने और समाधान की ओर प्रेरित करने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। उनकी कविताएँ समस्याओं को उजागर करने तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे पाठकों को आत्ममंथन और पर्यावरण संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाने की प्रेरणा भी देती हैं। इन कविताओं में प्रकृति और मानवता के बीच के टूटते संबंधों की मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और मानव लालच के कारण जो पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न हुआ है, उसे ये कविताएँ स्पष्ट रूप से सामने लाती हैं। कवियों ने अपनी रचनाओं में जंगलों, नदियों, पहाड़ों और ग्रामीण परिवेश के शोषण को केवल चित्रित ही नहीं किया, बल्कि उससे जुड़े मानव जीवन के संकटों को भी उजागर किया है।

साथ ही, इन कविताओं में प्रतिरोध के स्वर भी मुखरित होते हैं। यह प्रतिरोध प्रकृति को बचाने, संसाधनों के न्यायसंगत उपयोग और सतत विकास की अवधारणा पर आधारित है। चिपको आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन जैसे ऐतिहासिक पर्यावरणीय आंदोलनों से प्रेरित होकर, समकालीन कविताएँ सामाजिक चेतना को जागृत करने का कार्य करती हैं।

समकालीन कविता यह संदेश देती है कि पर्यावरणीय समस्याएँ केवल वैज्ञानिक या तकनीकी समाधान से हल नहीं हो सकतीं। इसके लिए मानवीय दृष्टिकोण और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता आवश्यक है। इस प्रकार, समकालीन कविता पर्यावरणीय चेतना का एक सशक्त माध्यम बनकर

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2024
Impact Factor:11.9
Subject:Literature

उभरती है, जो न केवल वर्तमान पीढ़ी बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी जागरूक और प्रेरित करती है। यह साहित्य का दायित्व है कि वह समाज को न केवल समस्याओं से अवगत कराए, बल्कि उन्हें समाधान के लिए प्रेरित भी करे।

संदर्भ ग्रन्थ:

- अज्ञेय, "नदी के द्वीप", साप्ताहिक हिंदुस्तान, 1970।
- मुक्तिबोध, "अँधेरे में", राजकमल प्रकाशन।
- केदारनाथ सिंह, "जमीन पक रही है", साहित्य अकादमी।
- कुंवर नारायण, "आकारों के आसपास", राधाकृष्ण प्रकाशन।
- राजेश जोशी, "दो पंक्तियों के बीच", वाणी प्रकाशन।
- शर्मा, आर. के., "पर्यावरणीय साहित्य का विकास", भारतीय साहित्य परिषद।
- सिंह, सुमित, "हिंदी कविता में प्रकृति चेतना", भारतीय ज्ञानपीठ।
- चिपको आंदोलन: "एक इतिहास", पर्यावरण संरक्षण समिति।
- नर्मदा बचाओ आंदोलन: "संघर्ष और उपलब्धियाँ", नर्मदा आंदोलन प्रकाशन।
- मिश्र, नरेश, "आधुनिक साहित्य और पर्यावरण", प्रभात प्रकाशन।

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2024
Impact Factor:11.9
Subject:Literature

shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

दीप्ति यादव
डॉ. रजनीश भारद्वाज

*****